

PROF. AJOY KUMAR RAY

Prof. Ajoy Kumar Ray is the first Director of the Indian Institute of Engineering Science and Technology (IIEST), Shibpur, earlier known as Bengal Engineering College, Shibpur. With untiring zeal, he elevated Bengal Engineering and Science University, Shibpur to an institution of national importance, and spearheaded the research and academic activities in the institute, which is now recognized as one of the top Engineering Institutes in India. He is also the Acting Director, shouldering the responsibilities for NIT Sikkim.

2. Born on February 26, 1954, Prof. Ray obtained his Bachelor's degree from Bengal Engineering College, Shibpur, followed by M.Tech and Ph.D from Electronics and Electrical Communication Engineering Department of IIT Kharagpur. He joined IIT Kharagpur as a faculty member in 1980. He was associated with the University of Southampton as Senior Research Fellow during 1989-90 and led the research group on 'Image and Video Processing' of Avisere Inc., USA during 2004-2005.

3. Prof. Ray has successfully completed more than twenty research projects, sponsored by DRDO, DAE, DST and also several multinational and national industries. He was the Principal Consultant for design, development and installation of the first indigenously designed controller for Aluminum smelter in IN DAL.

4. Prof. Ray was the Principal Investigator of research projects sponsored by Intel Corporation, during which period, he became the co-inventor of six US Patents jointly with INTEL Corporation, USA on Digital Camera. As a part of Texas Instruments sponsored research project, he is the co-inventor of six other US patents jointly with Texas Instruments on Diverse Aspects of Medical Imaging and Image Processing. Under his leadership, his group in the School of Medical Science and Technology at IIT Kharagpur has been working on a number of projects on 'Molecular Imaging and Image Processing', 'Medical Instrumentation', "Early detection of Oral, Breast and Cervical cancer" and Coronary Artery disease detection. He was the principal architect of a project networking several hospitals for preventive and promotive healthcare in West Bengal. Prof. Ray is the Fellow and Member of many professional bodies and is involved with a large number of Universities, research organizations in India. As Chairman of Nehru Museum of Science and Technology, IIT Kharagpur he took active role in popularization of Science and Technology amongst School and College children.

5. Prof. Ray has co-authored about 150 research papers in International journals and Conferences and six widely read books published by International Publishing Houses, including one in Chinese. He is also the author of 'History of Engineering Science in India', published by the National Academy of Sciences, India and the Ramakrishna Mission Institute of Culture, Kolkata.

6. Although pursuing a successful career in technology, Prof. Ray has immense interest in literature and is an avid reader of vernacular and English books. He derives his inspiration from Rabindranath Tagore's compositions and is indebted to the great poet for providing the foundation of his life's philosophy.



प्रो. अजय कुमार राय

प्रो.अजय कुमार राय, पूर्व में बंगाल इंजीनियरिंग महाविद्यालय, शिवपुर के नाम से जाने - जाने वाले भारतीय अभियांत्रिकी विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई ई एस टी) के प्रथम निदेशक हैं। अथक उत्साह के साथ आपने बंगाल इंजीनियरिंग और विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवपुर को राष्ट्रीय महत्ता की संस्था के रुप में समुन्नत किया तथा संस्थान में अनुसंधान और शैक्षिक गतिविधियों की अगुआई की, इस संस्थान को अब भारत के शीर्ष इंजीनियरिंग संस्थानों में जाना जाता है। आप एन आई टी सिक्किम के कार्यकारी निदेशक की जिम्मेदारियों को भी निभा रहे हैं।

2. आपका जन्म 26 फरवरी, 1954 को हुआ। आपने बंगाल इंजीनियरिंग महाविद्यालय, शिवपुर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और आई आई टी खड़गपुर के इलेक्ट्रोनिक्स और इलेक्ट्रिकल संचार अभियांत्रिकी विभाग से एम. टेक और पीएच.डी. की उपाधियां प्राप्त कीं। आपने 1980 में आई आई टी खड़गपुर में संकाय सदस्य के रुप में कार्यभार ग्रहण किया। आप 1989-90 के दौरान सीनियर रिसर्च फेलो के रुप में यूनिवर्सिटी ऑफ साउथैम्पटन से जुड़े रहे और वर्ष 2004-2005 के दौरान इमेज एंड वीडियो प्रोसेसिंग ऑफ एवासरे इंक, यू. एस. ए. से संबंधित अनुसंधान समूह का नेतृत्व किया।

3. आपने डी आर डी ओ, डी ए ई, डी एस टी और विभिन्न बहुराष्ट्रीय और राष्ट्रीय उद्योगों द्वारा प्रायोजित बीस से भी अधिक अनुसंधान परियोजनाएं सफलतापूर्वक पूर्ण की हैं। आप ईण्डैल के एलुमिनियम स्मेल्टर हेतु स्वदेशी रुप से तैयार प्रथम कंट्रोलर के डिजाईन, विकास और स्थापना संबंधी कार्य के प्रधान परामर्शदाता रहे हैं।

4. आप इन्टेल द्वारा प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं के प्रधान जांचकर्ता रहे हैं, इस अवधि के दौरान आप डिजिटल कैमरा संबंधी इन्टेल कॉरपोरेशन के साथ संयुक्त रूप से छह यू एस पैटेन्ट्स के सह-खोजकर्ता बने। टेक्सास इंस्ट्रुमेन्ट्स द्वारा प्रायोजित अनुसंधान परियोजना के एक हिस्से के रूप में आप मेडिकल इमेजिंग और इमेज प्रोसेसिंग के विभिन्न पक्षों के संबंध में टेक्सास इंस्ट्रुमेन्ट्स के साथ छह अन्य यू एस पैटेन्ट्स के सह-खोजकर्ता रहे हैं। आपके नेतृत्व में, आई आई टी खड़गपुर के स्कूल ऑफ मेडिकल सांइस एंड टेक्नोलोजी में आपका ग्रुप 'मोलेकुलर इमेजिंग एंड इमेज प्रोसेसिंग', मेडिकल इन्स्ट्रुमेन्टेशन' "मुंह, स्तन और सर्वाइकल कैंसर की समयपूर्व पहचान" और कोरेनरी आर्टेरी रोग की पहचान से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य कर रहा है। आप पश्चिम बंगाल में निवारक और प्रवर्तक स्वास्थ्य देखभाल हेतु विभिन्न अस्पतालों की नेटवर्किंग कर रही एक परियोजना के प्रधान निर्माता रह चुके हैं। आप बहुत से पेशेवर निकायों के फेलो और सदस्य हैं और आप भारत के बहुत से विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संगठनों के साथ जुड़े हुए हैं। नेहरु विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय, आई आई टी, खड़गपुर के अध्यक्ष के रुप में आपने विद्यालयों और महाविद्यालयों के बालकों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई है।

5. आप अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं और कन्फरेन्सों के 150 रिसर्च दस्तावेजों के और चीनी भाषा की एक पुस्तक सहित अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशन हाऊसों द्वारा प्रकाशित बड़े स्तर पर पढ़े जाने वाली छह पुस्तकों के सह-लेखक हैं। आप राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत और रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, कोलकाता द्वारा प्रकाशित 'हिस्ट्री ऑफ इंजीनियरिंग सांईस इन इंडिया' पुस्तक के भी लेखक हैं।

6. प्रौद्योगिकी में सफल करिअर होने के बावजूद आपकी साहित्य में गहरी रूचि है और आप स्वदेशी और अंग्रेजी की भाषा की पुस्तकों के भी उत्सुक पाठक हैं। आप रविन्द्रनाथ टैगोर की रचनाओं से प्रेरणा ग्रहण करते हैं और आपके जीवन दर्शन को आधार प्रदान करने में इस महान कवि के आप ऋणी हैं।